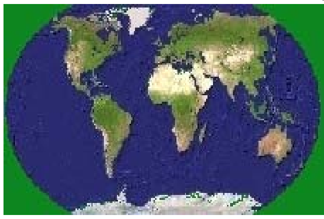

International Journal of
Multidisciplinary Research and
Development

Volume: 2, Issue: 7, 531-533
July 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 3.762

शिवशंकर द्विवेदी
प्रवक्ता भूगोल, सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी बॉदा उत्तर प्रदेश

रमाकान्त द्विवेदी
प्रवक्ता भूगोल, सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी बॉदा उत्तर प्रदेश

Correspondence:
शिवशंकर द्विवेदी
प्रवक्ता भूगोलए सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी बॉदा उत्तर प्रदेश

पर्यावरण अवनयन का जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य पर प्रभाव : चित्रकूट धाम जनपद का चिकित्सा भूगोल में एक अध्ययन शिवषंकर द्विवेदी एवं रमाकान्त द्विवेदी

शिवशंकर द्विवेदी, रमाकान्त द्विवेदी

शोध सारांष

संसार के प्रबुद्ध गर्व को ग्रामीण जनतातियों के बारे में जानने और समझने की जिज्ञासस सदा से ही रही है। यही जिज्ञासा समय–समय पर उन्हें सामाजिक कार्यकर्ता और अध्ययनकर्ता के रूप में ग्रामीण जनजाति के मध्य ले जाती रही है। भारत अपनी क्षेत्री विशालता और ग्रामीण जनजाति की बहुलता के कारण अध्ययनकर्ताओं के लिय सदैव आकर्षण का केन्द्र रहा है।

समाजिक आर्थिक विकास इन्हीं ग्रामीण जनजातियों के सामाजिक आर्थिक परिर्वतन पर निर्भर है यही कारण है कि इनके विकास हेतु विभिन्न विकास परियोजनाओं के माध्यम से बजट का एक बड़ा भाग व्यय जा रहा है। आदिवासी क्षेत्रों के भौगोलिक एवं भूगर्भिक अध्ययनों से स्पष्टतः यह तथ्य सामने आये हैं कि ये क्षेत्र खनिज सम्पदा, वन सम्पदा एवं जलविद्युत की असीम सम्भावनाओं से पूर्ण हैं। ग्रामीण आदिवासी योजनाओं को तैयार करते समय एक विचारणीय विषय रहा है कि आर्थिक लाभ बिना इसके सामाजिक परिवेश को बदले हुए किसी प्रकार पहुॅचाया जा सकता है। इन्हीं समस्त परिस्थितियों एवं भौगोलिक पर्यावरण के परिणामस्वरूप जनपद के ग्रामीण जनजातियों की सामाजिक, आर्थिक जीवन में बदलाव आ रहा है। इसी का अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र में किया जा रहा है।

प्रस्तावना– जैविक पर्यावरण के अन्तर्गत हरे पौधे, सम्पूर्ण पादप जगत, मानव सहित सम्पूर्ण जन्तु जगत तथा अपघटक सम्मिलित होते हैं। पर्यावरण के अन्तर्गत प्राकृतिक उर्जा, विकिरण, तापकम, जल, वातावरण की गैसे अर्थात वायु, अग्नि, गुरुत्व तथा स्थलाकृति प्रमुख है।

पर्यावरण के मूल घटक जन्तु और पादप ही हैं। अर्थात मानव और प्रकृति पर्यावरण के मूल घटक हैं। इसी कारण पादप और जन्तु अपने चारो के पर्यावरण तथा परिस्थितियों से प्रभावित रहते हैं। यदि पर्यावरण प्रतिकूल हो जाता है तो जीव शरीर नष्ट हो जाता है और जीवन प्रकियायें समाप्त हो जाती हैं। पर्यावरण का पर स्थान और समय का अत्यंत प्रभाव पड़ता है। कोई पौधा या जन्तु अपने जीवन काल में इस बदलते हुए वातावरण का प्रतीक है और उसका शरीर वातावरण की संयोजित क्रियाओं द्वारा ही निर्मित होता है।

अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक परिचय– मानिकपुर चित्रकूट धाम जनपद का ब्लाक एवं नवनिर्मित तहसील है। जिसका भौगोलिक विस्तार है। क्षेत्र विश्व भू–पटल पर कर्क रेखा के उत्तर 25 ^{0} 0^{श} से 25 ^{0} 10^{श} उत्तरी अक्षांश तथा 80 ^{0} 45^{श} से 81 ^{0} 30^{श} पूर्वीदेशांतर के मध्य विस्तृत है। जिसका भौगोलिक क्षेत्रफल 1095^{ण}14 वर्गकिलोमीटर जो जनपद में क्षेत्रफल के अनुसार सबसे बड़ा विकासखण्ड़ है। जहॉ पर 30270 परिवार रहते हैं, जो चित्रकूट धाम कर्वी और पहारी विकासखण्ड़ के बाद तीसरा बड़ा परिवार निवास वाला क्षेत्र है। जिसमें कुल जंसख्या 174043 जिसमें 93009 पुरूष तथा 81034 स्त्री निवास करती है, जिसका यौन अनुपात 871 जो जनपद का सबसे कम अनुपात है। जनपद में अनुसूचित जाति कि जनसंख्या कुल ग्रामीण जनसंख्या 0246662 जिसमें 130937 पुरूष तथा 115725 महिला जिसका यौन अनुपात 0883 है, एवं अनुसूचित अनजाति की कुल संख्या 361 जिसमें 193 पुरूष तथा 168 महिला जिसका अनुपात 870 है। जबकि मानिकपुर क्षेत्र में अनुसूचित जाति कि कुल जनसंख्या 63771 जिसमें 33887 पुरूष तथा 29884 महिला जिसका यौन अनुपात 882 है। सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में यौन अनुपात बड़ा ही विरला है जो भारतीय राष्ट्रीय अनुपात 993 से बहुत कम है, जो एक चिंता का विषय है।

चित्रकूट धाम जनपद का विकासखण्ड़वार मानचित्र

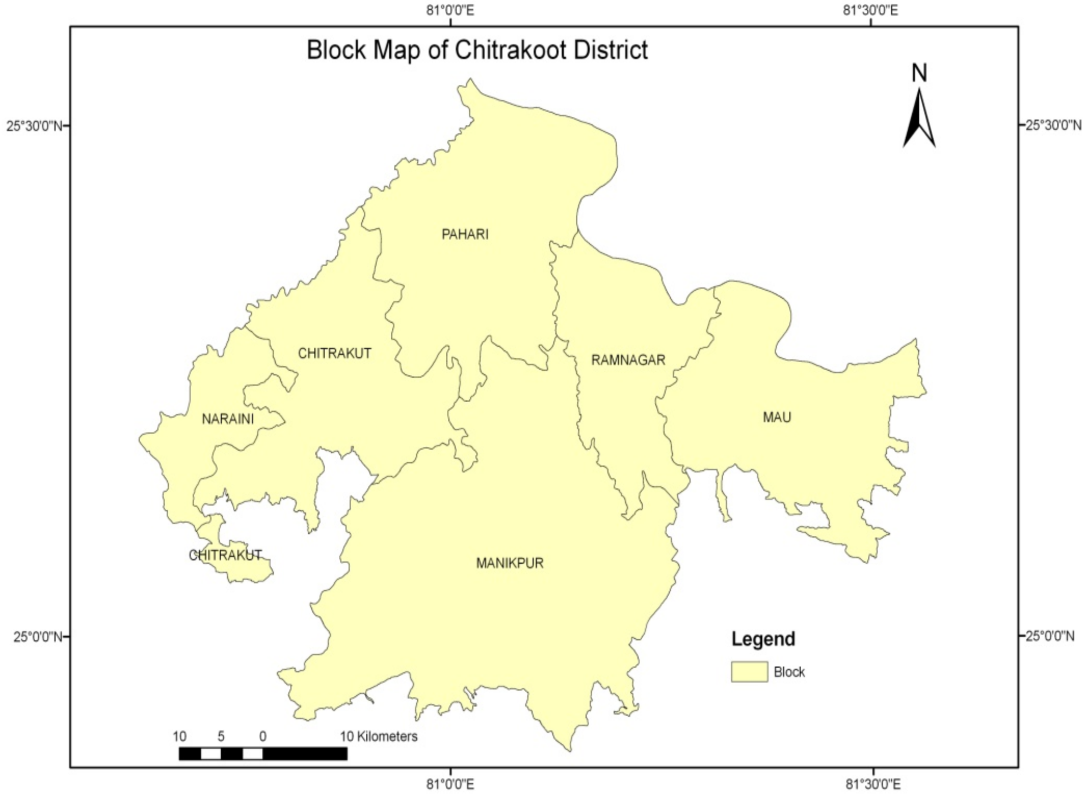

सामाजिक एवं आर्थिक परिचय– भारतीय समाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था विकास की संभावनाओं पर आज भी सबसे बड़ी रूकावट है। जाति प्रथा सामाजिक विकास पर सबसे बड़ी रूकावट है। चित्रकूट धाम जनपद के मानिकपुर विकासखण्ड़ क्षेत्र का जनजातीय समाज सबसे पिछडा वर्ग है, जिकारण जंगली वातावरण में निवास करना है।

आदिवासी की अर्थ व्यवस्था आज भी लघु वनोपज एवं शिकार पर निर्भर हैं। वे लोग पहले बेबर या डहिया खेती करते थे, किन्तु अब शासन ने इस खेती पर प्रतिबंध लगा दिया है जिससे ये अब स्थाई खेती करने लगे हैं। अधिकांश कोल भूमिहीन हैं, जिस कारण इनकी आर्थिक दशा दयनीय है।

शोधार्थी द्वारा किया गया व्यक्तिगत सर्वेक्षण से पता चला कि ये अपने शरीर पर बहुत कम कपड़े पहनते हैं इस जनजाति की महिलाऍ शारीरिक सज्जा पर ध्यान दती हैं। जेवर पहनना और गोदना गोदवाना इनका प्रमुख आभूषण हैं। जब कि पुरूष वर्ग हतोस यानी कमीज धोती सदरी आदि पहनते हैं इनका जीवन पानी के आभाव में बड़ा ही गन्दा है। इस क्षेत्र के वर्णन में महाकवि काली दास की महाकृति मेघदूत में लिख है कि जब मेघ रामगिरि से अलकापुरी तक जा रहे थे तब यक्ष ने मेघ से कहा कि भाई पूर्व लोकवन्दनीय भगवान् श्रीराम के चरण–चिन्हों से अलंकृत इस चित्रकूट पर्वत का अलिंगन करना ऐसा करने पर सिद्धों कि भोली भाली ललनाऍ बड़े आश्चर्य एवं कुतूहल के साथ आपके पुरूषार्थ को देखेंगी। क्योकि वहॉ कि भोली–भाली ग्राम्य–बालाऍ ललचाई ऑखों से आपको निहारेगी, क्योकि वहॉ पठारी भूमि होने के कारण सिचाई के क्रत्रिम साधनों के अभाव से कृषि का उत्पादन एक मात्र आप के जल पर ही निर्भर है। इस क्षेत्र की जल समस्या बड़ी जटिल है। जिसकारण यहॉ कि जनजाति वनों पर निर्भर। यहॉ कि जनसंख्या कि एक और व्स्था देखने को मिल जिसमें दखा कि जनजातियों में महिलाओं कि संख्या अधिक उम्रदराज कि हैं जबकि पुरूष कम उम्रदराज के इसका एक कारण यह भी है कि महिलाऍ घर की बागडोर अपने हॉथ में लिए रहती हैं जबकि पुरूष शराबी व नसेडी होने के कारण अल्प आयु में ही म्रत्यु होजाती है।

अध्ययन क्षेत्र की जन जाति– अध्ययन क्षेत्र में कोल और भील जन जातियॉ निवास करती है। इन जातियों का उल्लेख रामायण का के पूर्व से मिलता आ रहा है। रामायण काल में चित्रकूट के मानिकपुर एवं मऊ क्षेत्र से ही दण्डकारण्य प्रारम्भ था।[1] यहॉ पर मुख्यतः गोंड, कोल, भील, पुलिन्द, किरात आदि जनजातियॉ निवास करती थीं।[2] इस भाग पर जब आर्यों का आगमन हुआ तब इन्होंने इन जन–जातियों को पहाड़ि तथा वन क्षेत्रों कि ओर भगा दिया, जिस कारण यहां के अधिकांश कोल जनपद के उच्च–भू–भाग अर्थात मानिकपुर एवं मऊ के जगलों में चले गये तथा कुछ आदिम जाति मध्य प्रदेश के समीपस्थ जंगलों में रहने लगे । इनमें साक्षरता की कमी है। विधवा या तलाकशुदा महिला से विवाह करने की प्रथा है। पुरूष की अपेक्ष महिलाऍ अधिक कार्य करती है। महिलाऍ बीडी की नशा करती है। इनमें पर्दा प्रथा नहीं है। ये अपनी फसलों की रक्ष के लिए सूर्य, चन्द्र, वायु, तथा इन्द्र की पूजा करते हैं, गंगा, यमुना नदियों कि भी पूजा करते है। जादू–टोना पर विश्वास करते हैं। बिमारियों का इलाज परम्परागत ढ़ग से करते हैं।

भील जनजाति– भील शब्द द्रविड़ भाषा के बील शब्द से लिकला है, जिसका अर्थ है कमान। तीर कमान के व्यवहार में निपुण होने के फलस्वरूप संभवतः यह जनजाति भी कहलायी। एक दूसरी उत्पत्ति के अनुसार यह शब्द संस्कृत भाषा के भिदे शब्द का तदृभव रूप है, जिसका तात्पर्य भेदने की प्रक्रिया से है।

वर्तमान समय में ये जाति आधुनिक जीवन शैली के निकट आने के कारण आदिवासी की अपनी स्वयम् की सांस्कृतिक विशेषताऍ खो रहे हैं, ये अपने देवी–देवताओं को भी भूल रहे हैं। ये अपनी अर्थव्वस्था कि गति मानिकपुर, कर्वी के बाजर पर वनों को काट कर पूर्ति करते हैं।

आदिवासी स्वास्थ्य नीतियॉ एवं योजना– किसी राष्ट् के विकास के मूल में वहॉ के लोगो के स्वास्थ्य की प्रमुख भूमिका होती है। बीमारियों के स्वरूप तथा प्रकृति क्षेत्र विशेष के पर्यावरण के अनुरूप परिवर्तित होती हैं।[3] स्वास्थ्य सुविधाएं ऐसी आवश्यक मानवीय सुविधाएॅ हैं जो लोगों को स्वास्थ्य रहने से संबंधित होती है तथा इनका सम्पादन स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के द्वारा किया जाता है। प्रत्येक स्वास्थ्य कार्यकर्ता चाहे वह डॉक्टर हो या नर्स या अन्य कोई स्वास्थ्य शिक्षक, ऐसी सभी प्रकियायें जो लोगों के स्वास्थ्य संबंधी रीति–रिवाज पर एवं उनके परिर्वतनों से संबंधित ज्ञान एवं प्रवृत्तियों पर असर डालती है।

थामस के अनुसार स्वास्थ्य शिक्षा उन अनुभवों का योग है जो व्यक्ति, समुदाय तथा प्रजाति के स्वास्थ्य से संबंधित आदतों, वृत्तियों तथा ज्ञान को प्रकाशित करती है।[4]

स्वास्थ्य नीतियॉ– केन्द्र सरकार के स्वास्थ्य नीतियों के प्रमुख बिन्दु निम्नानुसार हैं–

सब के लिए स्वास्थ्य, यौन अनुपात में संतुलन सीापित करना, महामारी प्राकृतिक प्रकोप को त्वरित कार्यवाही, परिवार कल्याण, स्वास्थ्य सम्बन्धी शोध, शिशु एवं जननी सुरक्षा, पर्यावरण स्वच्छता, स्वास्थ्य शिक्षा एवं जागरूकता प्रमुख हैं।[5]

अध्ययन क्षेत्र की समस्याएॅ– अध्ययन क्षेत्र में शासकिय प्रयास के बाद भी क्षेत्र में निम्न समस्याएॅ हैं–

1. जनसंख्या की तीव्र वृद्धि अर्थात शिक्षा एवं परिवार नियोजन का अभाव।
2. मलिन बस्तियॉ अर्थात सुखद स्वास्थ्य का अभाव।
3. असन्तुलित आहार अर्थात कुपोषण

पर्यावरणीय समस्याएॅ

1. स्वच्छ जलापूर्ति की समस्या
2. मल विसर्जन की समस्या
3. असुरक्षित जलापूर्ति
4. प्रदूषण जनित अन्य समस्यायें।

स्वास्थ्य समस्याओं के निदान के उपाय– स्वास्थ्य समस्याओं के लिए निम्नलिखित उपाय किये जाने चाहिए–

1. गॉव–गॉव स्वच्दता केन्द्र की स्थापना
2. स्वास्थ्य शिक्षा का सामन्यीकरण

निष्कर्ष– चित्रकूट धाम जनपद के मानिकपुर विकासखण्ड के अन्तर्गत अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त हुई है कि अध्ययन क्षेत्र अत्यनत पिछडा हुआ है, जहॉ न कोई फैक्टी् है और न ही काई अन्य रोजगार प्राप्त करने का साधन यहॉ का जीवन अत्यन्त कठिन व दूभर हैं। यहॉ के लोगों का जीवन जंगल से शुरू होता है, जहॉ पर यहॉ की महिलाएॅ जंगलों में जा कर लकड़ी काटती हैं और उन्हें लाकर सन्निकट बाजर कर्वी एवं अतर्रा व बॉदा में जा कर बेचती हैं और मुद्रार्जन करती हैं। लेकिन यह कम यहॉ कि भोली–भाली महिलाओं के लिए अत्यन्त कठिन है। क्योंकि जंगलों में इन महिलाओं के साथ छेड़–खानी का भय बना रहता है, जंगलों में विषैले व बडे जीव–जन्तुओं का भी भय बना रहता है। यहॉ के लोगों का स्वास्थ्य अत्यन्त चिंतनीय है, यहॉ के पुरूष अत्यधिक मदिरापान करते हैं तो महिलाएॅ स्थानीय नशा बीड़ी पीती हैं जो दोनों के लिए घातक हैं एक सर्वे क्षण से पता चला कि यहॉ के अधिकांश लोगों कि मृत्यु खॉसी आने से हुई है। यहॉ शिक्षा का अभाव है।

जनजाति के समग्र जीवन पर दृष्टिपात किया जाए तो यहीं निष्कर्ष निकलता है कि इनका जीवन बडा ही दूरूह है, लेकि उनका बाह्य सम्पर्क का प्रभाव पड़ रहा है। इनके जीवन में परिर्वतन परिलक्षित हो रहा है। सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन भी दिख रहा है। इनमें सामाजिक कुरूतियॉ तथा अंधविश्वास कम हुआ है। परम्परागत जीवन में भी बदलाव जारी है। रीति–रिवाज, प्रथाएं, प्रचलन, रूढिवादिता में कमी आई है। प्राचीन आर्थिक प्रणालियॉ भी बदल रही है। शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ रहा है। आधुनिक विकास के प्रमुख साधनों वैज्ञानिक तकनीक ज्ञान तथा मनोरंजन के साधन के प्रति उनकी रूचि बढ़ रही है। इस पर संस्कृतिकरण का प्रभाव दिखाई दे रहा है।

विकास के साथ भी जनजाति के लोग अत्यन्त पिछड़ा तथा आर्थिक रूप से हीन भावना से ग्रसित हैं। इस संक्रमणकालीन स्थिति से उभरने हेतु उनके सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप परिवर्तन की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गोपाल कृष्ण एवं अडिन राजीव गांधी शिक्षा मिशन, पत्र डायरेक्ट्रेट 8/5/2001
2. मध्य प्रदेश का स्वास्थ्य क्षेत्र ˘ स्वास्थ्य स्थिति विश्लेषण, जून 2002
3. वी के राव एवं श्रीवास्तव पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी, वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर
4. जी सी सिंघाई चिकित्सा भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर
5. जिला गजेटियर बॉदा सन् 1971
6. प्रसाद गायत्री 1990 सांस्कृकि भूगोल
7. चान्दना आर0सी0 1994 जनसंख्या भूगोल
8. शुक्ला पी0एन0 1983 कखावतू गॉंव का भू–आर्थिकी सर्वेक्षण
9. गुप्ता संगीता 2004 (चिकित्सा विज्ञान लेख) प्रतियोगिता दर्पण पे0नं0–901
10. सिंह चौहान रणवीर 1992 अप्रकाशित शोध प्रबंध हमीरपुर तहसील उ0प्र0 भूमि उपयोग, पोषण स्तर एवं मानव स्वास्थ्य का भौगोलिक अध्ययन।
11. द्विवेदी रमाकान्त भूमि उपयोग, पोषण स्तर एवं मानव स्वास्थ्य, नरैनी विकासखण्ड़ बॉदा के ऐंचवार ग्राम का विशेष अध्ययन

1. Agnihotri R.C. 1995 Geomedical Environment and Health Care
2. C. Gopalan 1983 Diet Atlas of India.
3. C. Gopalan 1985 Nutritive value of Indian Foods, National Institute of Nutrition, I.C.M.R. Hyderabad.
4. Shafi Muhammad 1960 Land Utilization in Eastern Uttar Pradesh, Department of